<u>बिहारी</u>

कविपरिचय:-

बिहारी रीति काल के प्रसिद्ध कवि थे। 1595 ईस्वी में आपका जन्म ग्वालियर में हुआ। बिहारी जब सात-आठवर्ष के थे, तबअपने पिता के साथ ओरछा चले गए।यहाँ आपने आचार्य केशवदास से काव्य की शिक्षा प्राप्त की। यहींआप रहीम के संपर्क में आए। जयपुर में आप कुछ समय रहे। बिहारी की केवल एक रचना है-"सतसई", जिसमें लगभग 700 दोहे हैं। आप मूल रूप से श्रृंगार रस के कवि हैं। बिहारी की भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रज भाषा है। इनकी भाषा में बुंदेलखंडी व पूर्वी भाषा के शब्द भी मिलते हैं। आप का देहांत 1663 ईस्वी में हुआ।

पाठपरिचय:- पाठ्यपुस्तक में बिहारी के श्रृंगार, लोक व्यवहार, भक्ति व नीति के दोहे हैं। बिहारी ने आडंबरोंका विरोध किया है,नायक-नायिका की चेष्टाओं का वर्णन किया है। बिहारी के दोहों में कम शब्दों में अधिक कहने की क्षमता है, इसीलिए कहा गया है- बिहारी गागर में सागर भरते हैं।

सोहत ओढ़ै पीत पटुस्याम सलौने गात।

मनौनीलमनि शैल पर आतपुपरयौ प्रभात।।

शब्दार्थ:- सोहत - सुशोभितहोना, ओढ़ै-धारण किया हुआ, पीतपटु- पीला वस्त्र,स्याम- साँवला, सलौने -सुंदर, नीलमनि- नीलमणि, शैल- पर्वत, आतपु- धूप,परयौ- पड़ना।

व्याख्या:- साँवले-सलोने श्री कृष्ण के शरीर पर पीला वस्त्र इस प्रकार सुशोभित हो रहा है, मानो नीलमणि पर्वत पर प्रातः काल की धूप पड़ रही हो।

भाषासौंदर्य:-

1) भाषा शुद्ध ब्रजभाषा
2) दोहा छंद
3) स्याम सलोने अनुप्रास अलंकार
4) नीलमनि शैल उत्प्रेक्षा अलंकार
5) तुकांत रचना

कहलाने एकत बसत अहि मयूर,मृग,बाघ।जगतुतपोवन सौकियौदीरघ-दाघनिदाघ।।

शब्दार्थ:- कहलाने -व्याकुल होकर, एकत -एक साथ,बसत- रह रहे हैं, जगतु-संसार,दीरघ-दाघ-भीषण गर्मी,निदाघ-ग्रीष्म ऋतु।

व्याख्या:- ग्रीष्म ऋतु की भीषण गर्मी से व्याकुल होकर एक साथ रह रहे हैं- मोर, हिरण व बाघ।ऐसा लग रहा है संसार तपोवन अर्थात् तपस्या करने का स्थान बन गया है।

भाषासौंदर्य:-

1) ब्रजभाषा
2) दोहा छंद
3) मयूर, मृग, दीरघ-दाघ अनुप्रास अलंकार

4) तुकांत रचना

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।सौहकरैभौहनुहँसै,दैनकहै नटिजाइ।।

शब्दार्थ:-बतरस-बातों का आनंद, लाल- कृष्ण,लुकाइ- छुपाई,सौह-शपथ,भौहनु- भौंहमें, नटिजाई -मना कर देता है।

व्याख्या:- श्री कृष्ण की बातोंका आनंद लेने के लिए गोपियाँश्री कृष्ण की मुरली छुपा कर रख लेती हैं। श्री कृष्ण जब मुरली माँगते हैं, गोपियां सौगंध खाकर कहती हैंकि मुरली उनके पास नहीं है और फिर वेभौंह(आँखों ही आँखों) में हंस देती हैं,अर्थात् गोपियाँ श्री कृष्ण से अधिक से अधिक समय बातें करने का आनंद लेना चाहती हैं।

भाषासौंदर्य:-

1) ब्रजभाषा
2) दोहा छंद

3)तुकांत रचना

4)लालच लाल अनुप्रास अलंकार

कहत, नटत, रीझत,खिझत, मिलत,खिलत लजियात।

भरे भौनमैंकहतहैं नैननुही सब बात।।

शब्दार्थ:- नटत- मना करना,रीझत-मोहित होना, खिझत-खीजना,खिलत - प्रसन्न होना,लजियात-शर्माना, भरे भौन-भरे भवन,नैननु- आंखों में।

व्याख्या:- नायक नायिका से मिलने के लिए कहता है।नायिकामना कर देती है।नायिका के मना करने के ढंग पर नायकरीझजाता है। इस पर नायिका खीझ जाती है। उसी समय उनकी आंखें मिल जाती हैं और वे दोनों प्रसन्न हो जाते हैं, परंतु उसी समय नायिका लजा जाती है। नायकवनायिकाये सब बातें आंखों ही आंखों में कर रहे हैं, क्योंकि वे दोनों एक ऐसे भवन में बैठे हैं,जहाँकई लोग हैं।

भाषासौंदर्य:-

1) ब्रजभाषा

2) दोहा छंद

3)श्रृंगार रस

4) भरे भौन अनुप्रास अलंकार

5) तुकांत रचना

बैठि रही अति सघन बनपैठिसदन-तनमाँह।

देखि दुपहरी जेठ कीछाँहौचाहतिछाँह।।

शब्दार्थ- अति -अत्यधिक, सघन- घना, बन- जंगल, सदन-तन- भवन में, माँह-बीच में,जेठ-ज्येष्ठमहीना,छाँहौ-छाया में।

व्याख्या-ज्येष्ठ के महीने की भयंकर गर्मी है। पूरी पृथ्वी गर्मी से जल रही है। ऐसा लगता है इस भीषण गर्मी में छाया भी छाया चाहती है, क्योंकि छाया या तो घने जंगलों में मिलती है या फिर घर में।

भाषासौंदर्य:-

1) ब्रजभाषा

2) दोहा छंद

3) तुकांत रचना

4) छाया का मानवीकरण किया गया है, इसलिए मानवीकरण अलंकार

5) देखि दुपहरी अनुप्रास अलंकार

कागदपर लिखतन बनत कहत संदेसुलजात।

कहिहैसबुतेरौहियौमेरे हियकी बात।।

शब्दार्थ-कागद- कागज,संदेसु- संदेश,

सबु- सब, हियौ- ह्रदय।

व्याख्या:- नायक वनायिका एक दूसरे से दूर हैं।नायिका नायक को संदेश देना चाहती है।नायिका कागज पर संदेश लिख नहीं पाती, क्योंकि उसकी आँखों में आंसू है और हाथ काँप रहे हैं। दूत के द्वारानायक को संदेश देने में नायिका को लज्जा आ रही है। ऐसे में नायिका कहती है किमेरे ह्रदय की बात नायक स्वयं समझ लेगा, क्योंकि नायक की स्थिति भी वही होगी जो नायिका की है, क्योंकि दिल से दिल को राह होती है।

भाषासौंदर्य:-

1) ब्रजभाषा

2) दोहा छंद, तुकांत रचना

3) शृंगार रस

4) माधुर्य गुण

5) दूसरी पंक्ति में अतिशयोक्ति अलंकार

प्रगट भए द्विजराज-कुल सुबस बसे ब्रज आइ।

मेरे हरौकलेस सब केसव केसवराइ।।

शब्दार्थ- प्रगट- उत्पन्न, भए-हुए, द्विजराज -ब्राह्मण,सुबस-अपनी इच्छा से, बसे -बसना,कर हरौ-दूर करो, कलेस- दुख, केसव -कृष्ण, केसवराय -केशवराय(बिहारी के पिता)

व्याख्या- इस दोहे के दो अर्थ हैं। इसमें बिहारी अपने पिता व अपने आराध्य देव से प्रार्थना कर रहे हैं।

पिता के संदर्भमें- कवि कहते हैं मेरे पिता ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए। अपनी इच्छा से ब्रज में जाकर बस गए। मेरे सारे दुख दूर करो श्री कृष्ण की आराधना करने वाले मेरे पिता केशवराय।

श्री कृष्ण के संदर्भ में - कवि कहते हैं किश्री कृष्ण चंद्र वंश में उत्पन्न हुए। अपनी इच्छा से ब्रज प्रदेश में आकर बस गए। मेरे सारे कष्ट दूर करो मेरे पिता केशवराय के आराध्य देव श्री कृष्ण।

भाषासौंदर्यः-

1) ब्रजभाषा

2) दोहा छंद

3) तुकांत रचना

4) केसव केसवराइ यमक अलंकार

5) बसे ब्रज अनुप्रास अलंकार

6) भक्ति भाव

जप माला,छापै तिलक सरैनएकौकामु।

मन काँचैनाचैबृथासांचैराँचैरामु।।

शब्दार्थ- सरै- पूरा होना,एकौ-एक भी, कामु- काम,काँचै-कच्चा,बृथा- बेकार,

साँचै-सच्चा,रामु- ईश्वर।

व्याख्या- माला जपने से, छापे वाली चादर ओढ़ने से, तिलक लगाने से एक भी काम पूरा नहीं होता अर्थात् आडंबर करने से ईश्वर प्राप्त नहीं होते। कच्चे मन के व्यक्ति व्यर्थ की बातोंवआडंबरोंमें विश्वास करते हैं। सच्चे मन से भक्ति करने वाले के हृदय में ईश्वर निवास करते हैं।

भाषासौंदर्यः-

1) ब्रजभाषा

2) दोहा छंद

3)तुकांत रचना

4) भक्तिभाव, शांत रस

5)राँचैराम अनुप्रास अलंकार

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) छाया भी कब छाया ढूँढने लगती है?

उत्तर- ज्येष्ठ के महीने की भीषण गर्मी में जब पूरी पृथ्वी गर्मी से तप रही होती है,तब पशु-पक्षी भी गर्मी से बचने के लिए छाया खोजते हैं। ऐसे में छाया या तो घने जंगलों में मिलती हैया फिर घर में। इसीलिए कहा गया है कि छाया भी छाया ढूंढ रही है।

प्रश्न 2) बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है –"कहिहैसबुतेरौहियौमेरेहियकी बात"- स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बिहारी की नायिका नायक को संदेश लिख नहीं पा रही, क्योंकि उसकी आँखों में आँसू हैं।उसके हाथ काँप रहे हैं। संदेश वाहक के द्वारा संदेश भेजने में उसे शर्म आ रही है। ऐसे में नायिका कह उठती है किजोभाव मेरे मन मेंउठ रहे हैं, वही भाव नायक के मन में भी उठ रहे होंगे। इसीलिए मेरे हृदय की बात उसकाहृदय समझ लेगा, क्योंकि दिल से दिल को राहत होती है।

प्रश्न3)सच्चे मन में राम बसते हैं। दोहे के संदर्भ में स्पष्ट करें।

उत्तर- कवि का कहना है माला जपने से, छापे वाली चादर ओढ़ने से, तिलक लगाने से ईश्वर प्राप्त नहीं होते। यह सब तो आडंबर हैं। ईश्वर तो सच्चे हृदय में निवास करते हैं,अर्थात् सच्चा भक्त ईश्वर को अपने हृदय में खोजता है, इधर-उधर नहीं।

प्रश्न 4)गोपियाँ कृष्ण की बांसुरी क्यों छुपा लेती हैं?

उत्तर– गोपियाँश्री कृष्ण की बातों का आनंद लेना चाहती हैं, इसीलिए बांसुरी छुपा लेती हैं। श्री कृष्ण उनसे बांसुरी माँगते हैं।गोपियाँ मना कर देती हैं। फिर आँखों ही आँखों में हँस देती हैं, जो प्रकट करता है कि बांसुरी उन्हीं के पास है। श्री कृष्ण फिरसेबाँसुरी माँगते हैं, अर्थात् यह सब केवल श्रीकृष्ण की बातों का आनंद लेने के लिए किया जा रहा है।

प्रश्न 5) बिहारी कवि ने, सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया? स्पष्ट करें।

उत्तर- नायक और नायिका एक भवन में बैठे हैं,जहाँ अनेक लोग हैं। सभी लोगों की उपस्थिति में नायक औरनायिका कुछ इस प्रकार आंखों ही आंखों में बात करते हैं। नायक नायिका को मिलने के लिए कहता है।नायिका मना कर देती है।नायिकाके मना करने के ढंग से नायक उस पर रीझ जाता है और नायिका खीझजाती है। उसी समय उनकी आँखें मिल जाती हैं। नायक प्रसन्न हो जाता है तथा नायिका शरमा जाती है।

प्रश्न 6) बिहारी के अनुसार ईश्वर का वास कहाँहोता है?

उत्तर- बिहारी के अनुसार सच्चे हृदय में ईश्वर का वास होता है। माला जपने से, तिलक लगाने आदि से ईश्वर प्राप्त नहीं होते।

प्रश्न7) बिहारी द्वारा वर्णित कृष्ण के रूप सौंदर्य को अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

पीले वस्त्रों में सुसज्जित श्री कृष्ण के बारे में बिहारी ने क्या कल्पना की है?

उत्तर- साँवले-सलोने श्री कृष्ण ने पीले वस्त्र धारण किए हैं। वह ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, जैसे नीलमणि पर्वत पर सुबह के सूर्य का प्रकाश पढ़ रहा हो।

प्रश्न 8) तपोवन से क्या तात्पर्य है? कवि ने इसका वर्णन किस प्रकार किया है?

उ-जहाँ तपस्वी तपस्या करते हैं, उस स्थान को तपोवन कहते हैं। तपस्या के प्रभाव के कारण सब जीव अपनीदुश्मनी भूलकर एक साथ रह रहे हैं। इसी प्रकार भीषण गर्मी के कारण सर्प, मोर, हिरण, शेर अपनी दुश्मनी भूल कर एक साथ रह रहे हैं।

प्रश्न 9)"मेरे हरौकलेस सब केसवराइ" इस पंक्ति में केसव शब्द का प्रयोग करते हुए बिहारी ने किस की महत्ता को प्रतिपादित किया है?

उत्तर-बिहारी ने इन पंक्तियों में श्रीकृष्ण व अपने पिता से अपने कष्ट दूर करने की बात की है।कवि कहते हैं ब्राह्मण कुल के उनके पिता अपनी इच्छा से ब्रज प्रदेश में आकर बस गए। केशव (श्रीकृष्ण) की उपासना करने वाले उनके पिता, उनके कष्ट दूर करें।

चंद्रवंश में उत्पन्न हुए ब्रज प्रदेशमें आकर बस गए बिहारी व उनके पिता केशवराय के आराध्य देव, उनके कष्ट दूर करें।